चीको मेंडेस

जंगल की लड़ाई
चीको मेंडेस

अमेजोनिया
ब्राजील
जंगल की लड़ाई

दक्षिण अमेरिका
SOUTH AMERICA
विषय सूची

अध्याय १ : संघर्ष के संकेत

अध्याय २: अमेज़ॉन का वर्षा-वन

अध्याय ३: रबर इकट्ठा करने वाले (टैपर) लोगों का इतिहास

अध्याय ४: एक रबर टैपर का जीवन

अध्याय ५: बरबादी की शुरुआत

अध्याय ६: वन की रक्षा के लिए संगठित

अध्याय ७: संघर्ष जारी है
"मुझे अब यह समझ आया है, कि हमारा संघर्ष सम्पूर्ण मानव जाति के लिए है।"

अध्याय १ : संघर्ष के संकेत

१९८६ की ग्रीष्म-क्रतु का अंत समीप था, और कुछ स्री-पुरुषों और बच्चों का एक समूह एक विशाल चरागाह के मध्य चला जा रहा था। यह चरागाह ब्राजील के अमेज़ॉन वर्षा-वन के बीच-बीच स्थित एक बहुत बड़े मवेशीखाने का हिस्सा था।

मवेशियों के लिए यह चरागाह बनाने के लिए जंगल के इस हिस्से के सारे पेड़ों को काट कर जन्ता दिया गया था। वन्य जीवन से कभी भरपूर रही इस धरती पर अब केवल सूर्य की किरणों से झुलसी घास की एक हलकी सी परत भर बची थी।

यह नीसस चरागाह अपने आस-पास के घने जंगलों से बिलकुल भिन्न था। इन वर्षा-वनों को सदियों की धूप और वर्षा ने पोषित करके इतना गहन और घना बना दिया था, कि वहां दिन में भी अंधेरा सा प्रतीत होता था। वहां की हवा पक्षियों के लगातार चहचहाने और पत्तों में छिपे कीट-पतंगों की मधुर आवाजों से गूँजती रहती थी। घने पेड़-पौधों का एक गहन हरा शामिल जैसे किसी छतरी की तरह जंगल की धरती की रक्षा कर रहा हो। घने वृक्षों के इस शामिलने को दक्षिण अमेरिका के चिलचिलाते सूर्य की तीव्र किरणें भी नहीं भेद पाती थी।
पैदल जाते उस समूह की तेज धूप से रक्षा के लिए आस-पास एक भी पेड़-पीधा न था। न ही वहं कोई पक्षी या कीट-पतंग थे, जो अपनी मधुर आवाजों के संगीत से उनका मनोरंजन करते। अगर कोई आवाज थी तो केवल इस तहस-नहस हुई धरती पर चलते उन लोगों के पदचापों की धीमी आवाज।

इस समूह का अगुवा था, कुछ मोटी तोंद और गठीले बदन वाला एक छोटे कद का व्यक्ति, जिसके घने काले बाल हवा में उड़ रहे थे और उसके चेहरे पर एक दोस्ताना मुस्कान थी। उसके बालों की लटें उसके गर्दन के आस-पास झल रही थीं, और उसके माथे का ढक रही थी। उसकी बड़ी-बड़ी गहरी भूरी आँखों में उसका शांत और निश्चित व्यक्तित्व साफ़ झलकता था। जब वह मुस्कुराता, उसकी आँखों के नीचे सलवटें पड़ जातीं। चीको मेंडीस अक्सर ही मुस्कुराता था, और जब वह ऐसा करता, उसकी घनी मूंछें और उसके होठों के किनारे ऊपर को उठ जाते।
उस समूह के और लोगों की भावत ही मंड़ेस भी ज़िर्दिनी भर पेड़ों से रख निकालने का काम करता रहा था। रबर के पेड़ को काटने पर उसकी छाल से जो दूध निकलता है, उसे इक्कड़ा करना ही इस सब का दिन भर का काम था। यह दूध, जिसे लेटेक्स कहा जाता है, रोजमर्रा के इस्तेमाल की बहुत सी चीज़ें बनाने के काम आता है, जैसे कि टेईया, खेल का सामान, खिलाड़ियों के जूते, और रबर से बना अन्य सामान।

इन रबर इक्कड़ा करने वालों की जीविका जंगल से मिलते वाले इसी पदार्थ को बेच कर चलती थी। वे रबर के पेड़ों या जंगलों को बिना कोई हानि पहुंचाए, पेड़ से लेटेक्स निकाल लेते थे। इस प्रकार धरती को हानि हानि पहुंचाए उससे कोई उपयोगी पदार्थ ले लेने का ही नाम है चिरस्थायी खेती (Sustainable Agriculture)

लेकिन अमेज़ान के वर्ष-वनों में हर कोई इस प्रकार की चिर-स्थायी खेती का पालन नहीं कर रहा था। बहुत से लोग ऐसे भी थे जो इन वर्ष-वनों को नष्ट करके धन कमा रहे थे।

पशु-पालन और खेती-बाड़ी करने वाले लोग हर साल हज़ारों एकड़ वनों को काट डालते थे। इस प्रक्रिया को निर्विन्दिकरण (Deforestation) कहा जाता है। वे वनों को काट कर मिली जमीन का इस्तेमाल फसलें उगाने या मवेशी चराने के लिए करते। निर्माण कार्य में लिप्त कम्पनियों नई सड़कें बनाने के लिए वनों के बड़े हिस्से को काट डालती थीं। इमारती लकड़ी के व्यस्तरायी सैकड़ों सालों से बढ़ रहे मजबूत लकड़ी वाले पेड़ों को रोजाना काट गिराते। वर्ष-वन में बहने वाली अनेक नदियां अब खदानों में इस्तेमाल होने वाले रसायनों के कारण प्रदूषित हो चुकी थीं।

वर्ष-वन को बड़ी भयावह तेज़ी से नष्ट किया जा रहा था। जैसे जैसे वन की कटार, जलाया और प्रसीतित किया जा रहा था, इस वन की हरियाली में प्रचुर संख्या में बसने वाले वन्य जीवों का भी विनाश हो रहा था। वन के पेड-पीधे, पशु-पशी, कीट-पतंग और फल-फूल, ये सभी अपने-अपने अस्तित्व के लिए एक दूसरे पर, और पर्यावरण पर निर्भर होते हैं।

वर्ष-वन में रहने वाले पशु-पक्षियों और पेड-पीधों में आपसी रिश्तों का एक ताना-बाना सा बन जाता है। जीवों और उनके पर्यावरण के बीच रिश्तों के इस तान-बाने को परांतत्या या इकोसिस्टम (Ecosystem) का नाम दिया गया है। वर्ष-वन बहुत विशाल होते हुए भी इसका इकोसिस्टम बहुत नाजुक होता है। जब भी वन के किसी हिस्से का कटार जाता है, पेड-पीधों या पशु-पक्षियों की सैकड़ों, या शायद हज़ारों प्रजातियों नष्ट हो जाती है।

यह विनाश केवल वन्य-जीवों के लिए ही खतरा नहीं है। इससे रबर इक्कड़ा करने वालों की रोजी-रोटी भी खतरे में आ जाती है। इतना ही नहीं, जैसा कि चीज़े मंड़ेस को अमेज़ान को बचाने के अपने अभियान के दौरान समझ आया, वर्ष-वनों का विनाश पूरी धरती के पर्यावरण के लिए खतरा पैदा करता है।

लेकिन 1986 के उस धूप से तपते दिन जो लोग चीज़े मंड़ेस के साथ चले जा रहे थे, उनकी चिंता का मुख्य विषय पृथ्वी के भविष्य को लेकर नहीं था। उन्हें से अधिकांश को अपनी जीविका चलाने का एकमात्र उपाय खतरे में पड़ता नज़र आ रहा था। चीज़े मंड़ेस अपने साथियों को कटे हुए जंगल से दूर ले जा रहा था। वे जिस रास्ते पर चल रहे थे वह घने जंगलों की ओर जा रहा था।
जैसे ही वे जंगल में पहुँचे, सूर्य की चिलचिलाती धूप पीछे रह गई। अचानक चारों ओर धुंधलके की एक चादर सी बिखर गई। जैसे वे लोग आगे बढ़ने लगे, उन्होंने गाना शुरू कर दिया। उनके आवाज़ें ऊपर उड़ी, और जैसे घने पेड़ों की हरियाली में गुम हो जाती। रास्ते में उन्हें दूसरे रबर इंका करने वालों के नज़र मिले, जो कि पेड़ के तनों और घास से बनाए गए थे। वे चट्टों तक चलते रहे।

गहरे जंगल में पहुँच कर उन्हें एक विषम करने वाली आवाज सुनाई दी। यह आवाज जंगल में चलने वाली आरियों (Chain Saw) की थी। नज़दीक ही कोई इस आरी की मदद से पेड़ों को काट रहा था। मेंडेस अपने इस जत्थे को यहाँ इस्तेमाल कर आया था। जिससे वह जंगल के इस हिस्से को नष्ट कर रहे इन लोगों को रोक सके। इस प्रकार के शांतिपूर्ण विरोध का नाम था "इम्पाटे" (Empate).

चीको मेंडेस ने सबको इंका करके उन्हें समझाया कि अब क्या करना है। "मुझे विश्वास है ये मुड़ी भर लोग ही हैं," मेंडेस ने कहा, "और आप हमारा प्रतिकार नहीं करेंगे। लेकिन हमें उनको यह समझाना होगा कि हमारे इस्तेमाल है। आप लोग कोई भी आक्रामक बात न कहें, और ध्यान रखें कि वे लोग बिलकुल भयभीत महसूस न करें।"
अध्याय २: अमेज़ॉन का वर्षा-वन

कल्पना कीजिये एक इतने बड़े जंगल की, जो मेन (Maine) से फ्लोरिडा, न्यू मेकिसिको और मोंटना (Montana) तक फैला हो, और बीच के सभी राज्यों को अपने में समाया हुए। इसना बड़ा है अमेज़ॉन का वर्षा-वन, यानि २४ लाख वर्ग मील से भी अधिक।

आकाश से देखने पर यह वर्षा-वन एक अन्तर तक फैले हुए होंगे कालीन जैसा दिखी है। असल में अमेज़ॉन का यह जंगल अक्लस्ती जैविक विविधता से भरा हुआ है। यहाँ का तापमान सदा ही अधिक रहता है, नमी भी बहुत ज्यादा, और वर्षा भी अधिक। इसके कारण यहाँ एक ऐसा पर्यावरण निमित हुआ है, जिसमें वृक्षों और जंतुओं की हारां प्रजातियाँ खूब पनपी और फली-फूली हैं।

अमेज़ॉन वर्षा-वन के गर्मी और नमी से भरे वातावरण में वृक्षों की पचास हज़ार से भी अधिक प्रजातियाँ मौजूद हैं। अमेज़ॉन नदी और उसकी सहायक नदियों में तीन हज़ार से भी अधिक प्रकार की मछलियाँ पाई जाती हैं। इस जंगल में मात्र दो एकद हो स्थान में भी बैकलानिकों को पेड़ों की २३० से अधिक प्रजातियाँ मिलीं। यह वर्ग फुट के एक क्षेत्र में, सड़कें तट तटों के नीचे, उन्हें ५० अलग-अलग प्रकार की चींटियाँ मिलीं। एक अंकला पेड़ ४०० से अधिक कीट-पतंगों को शरण देता है।

मेंडेस द्वारा वर्षा-वनों के संरक्षण के लिए आयोजित किये गए अनेक सत्यारह इसी प्रकार के थे। इस जोड़े-जोड़ी की अगुआई में देस के अन्य देशों और अंतर्राष्ट्रीय (Acre) में ही नहीं, बल्कि पूरे अमेज़ोनिया (Amazonia) में कर रहा था। वर्षा-वनों वाले राज्यों के पश्चिमोत्तर भाग को अमेज़ोनिया कहा जाता है।

यद्यपि अमेज़ोनिया को बचाने के लिए मेंडेस ने अपनी इंतज़ार की अंतिम के विरुद्ध था, लेकिन अभिनव वह विरोध कर रहा था, वे लोग शांतिप्राप्त नहीं थे। दिसंबर १९८८ में उन लोगों में चीको मेंडेस की हत्या कर दी। एक ऐसा सजन व्यक्ति जो सदा अपने अनुयायियों को अन्वेषकार पूर्ण करते थे, उसे इस लिए मार डाला गया, क्योंकि वह जंगलों को बचाने का प्रयत्न कर रहा था।

चीको मेंडेस की मृत्यु के समय तक उसका यह संरक्षण अमेरिका के वर्षा-वनों से बहुत आगे आ गया था। उसके प्रयुक्तों के कारण, वन-संरक्षण के इस अभियान से वे सभी लोग जुड़ गए थे, जिन्हें पर्यावरण की चिनता थी।

"हमने यह संरक्षण रक्षा के पेड़ों और जंगल की अपनी जीवन-शैली को बचाने के लिए शुरु किया था," उसने कहा। "फिर हम समझ आया कि हम इसके द्वारा पूरे अमेज़ोनिया की रक्षा कर रहे थे।"

"लेकिन अब मैं अनुभव करता हूँ कि हम पूरी मानव-जाति के लिए संरक्षण कर रहे हैं।" चीको मेंडेस ने कहा।
इस वर्षा वन में बनसप्तक के ३० फीट से भी ऊंचे पेड़, और सात फुट से भी चौड़े कमल के फूल पाए गए हैं। आठ इंच लम्बे पंखों वाली चमकदार नीले रंग की तितलियाँ यहाँ फड़फड़ रही हैं, और किसी बच्चे की मुड़ी के जितने बड़े झाँपुरों के साथ सौंदर्य सी दिखाने वाली इलाक़े यहाँ की धरती पर रंगती दिखाई देती है। यहाँ के पिसारों के मछलियाँ बढ़ कर सात फुट तक लम्बी हो जाती हैं।

इसमें बहुत से पेड़-पौधे और जंतु ऐसे हैं, जो जिव और कहीं नहीं पाए जाते। इन प्रजातियाँ जीवित रहने के लिए अमेजन वर्षा-वन के पिघला पर्यावरण पर निर्भर है।

भूमध्य रेखा के निकट होने के कारण इस वर्षा वन को प्रतिदिन पूरे १२ घंटे की तेज और सीधी धूप मिलती है। यहाँ प्रतिदिन लगभग ८६ डिग्री फैरनहेट का तापमान रहता है, और हवा हमेशा ही अत्यधिक नम रहती है। रोज दोपहर को तेज वर्षा होती है, साल भर में १०० इंच से भी अधिक।

इस तेज धूप, गर्मी, नमी और वर्षा ने ही जन्म दिया है। इस सप्ताह हरियाली से भरपूर अमेजन के वर्षा-वन को ऊंचाई में दिखाने वाला हरियाली का यह कालीन असल में विशालकाय और लम्बे पेड़ों, और उन पर चढ़ो सघन बेलों के शिखरों से बना है। अधिकांश सूर्य की रोशनी पाने के लिए उसकी छोटी पत्तियाँ और मोटी-मोटी शाखाओं का बढ़ाव ऊपर की ओर होता चला जाता है, जिससे वर्षा-वन की यह ऊपरी सतह तैयार होती है, जिसे छतरी या शामिलाना (Canopy) का नाम दिया गया है। जिन पेड़-पौधों से यह छतरी बनी है, वे १०० से १३० फुट तक ऊंचे होते हैं।

थोड़ा नजदीक से देखने पर यह छतरी एक समतल हरा कालीन नहीं, बल्कि उभरने और भर किसी घास के मैदान जैसे नज़र आती है। ये उभरा वे पेड़ हैं, जो बढ़ कर छतरी से कुछ और ऊंचे हो गए हैं। इन पेड़ों को उद्भास या इमर्जेंटs (Emergents) कहा जाता है, क्योंकि वे छतरी से ऊपर निकल आये हैं। वे जंगल के धरातल से १६० फीट से भी अधिक ऊंचाई तक बढ़ जाते हैं।
अमेजन के वर्षा-वन के अधिकांश जीव-जंतु, और उसका रंग-रूप इस छत्री में ही होते हैं। यह छत्री इस वन के अनेक जीवों और पौधों को घर प्रदान करती है।

छत्री की ऊपरी सतह पर चमकीले फूल हवा को सुगन्धित करते हैं। इन फूलों का मधु पराग असंख्य तितलियों, मधुमक्खियों, पक्षियों और चमगादड़ों को आकर्षित करता है। एक से दूसरे फूल पर मंडराते ये वन के जीव इन पीठों के पराग को फैला कर उनके संवर्धन में सहायक होते हैं। परागण की इस प्रक्रिया से कुछ फूलों में फल निकलते हैं, जो यहाँ के बंदरों, तोतों और जंगल के दूसरे जीवों को भोजन प्रदान करते हैं। बदलते ही ये जंतु इन पीठों के बीजों को जंगल की मिट्टी में फैलाने में सहायक होते हैं, जिससे और नए पीठे उगते हैं।

छत्री में चारों ओर चमकीले रंगों वाले, अनानास की प्रजाति के, अन्य प्रकार के हवाई पीठे पाए हैं। ये हवाई पीठे अपनी जल्दी दूसरे पेड़ों और बेलों के तनों पर जमा लेते हैं, और भोजन व पानी की अपनी अधिकांश आवश्यकता हवा से ही प्राप्त कर लेते हैं। इन हवाई पीठों के फूल कटोरी के आकार के होते हैं, जिनमें पानी भर जाता है, और मैंडक व कीट-पतंग अक्सर इनमें अपना घर बना लेते हैं।
छतरी, जमीन से करीब ५० से ८० फीट ऊपर, वनस्पतियों का एक दूसरा तल है, जिसे छतरी का निचला तल (Understory) कहा जाता है। यह निचला तल घनी झाड़ियों और लकड़ी जैसे मोटे तने वाली बेलों (Lianas) का एक ताना-बाना है, जिसमें अनेक नन्हे पौधे और झाड़ियां जन्म लेती रहती हैं। सूर्य की छुट-पुट धूप को पाने की स्थान में वे पौधे भी बढ़ कर ऊपरी छतरी के तल तक पहुँच जाते हैं।

वर्षा-वन की सबसे निचली पर्व जंगल की धरती पर होती है, जहां सड़ती पतियों और विघटित होते पेड़ों के तनों का एक स्मृत जैसा कालीन सा बिछा होता है। सूर्य का सीधा प्रकाश मुक्तिक तक ही यहां तक पहुँच पाता है। यहाँ कोई वही वनस्पति देखने को नहीं मिलती, सिवाय कुछ घुका-घुका नन्हे पौधों के।

कभी कभी जब कोई विशालकाय वृक्ष गिर जाता है, तो छतरी के बीच से सूर्य की कुछ रोशनी नीचे तक पहुँचती है। जब तलहटी के नन्हे पौधों पर यह रोशनी पड़ती है, तो वे और अधिक प्रकाश पाने को तेजी से बढ़ कर छतरी में हुए इस छेद को फिर से बंद कर देते हैं।
अच्छे के बत यह है की वर्षा-चन की मिट्टी की पत्ते काली किंचली और अंगुलामूल होती है। सदियों ने तेज वर्षा से मिट्टी के उपजाऊ तत्त्व धुल कर बढ़ चुके होते हैं। इसलिए यहाँ के पेड़-पोछे ने भी बहुत छिछली जड़ें विकसित कर ली हैं, जो कि मिट्टी की इस पत्ती परत को बांध रखती हैं, जिससे वह वर्षा के साथ वह न जाए।

वर्षा-चन के इकोसिस्टम में प्रत्येक पौधे व जीव-जंतु की अपनी भूमिका है, और यहाँ कुछ भी बेकार नहीं जाता। कभी-कभी ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे वर्षा-चन पुनर्चक्रण (Recycling) का एक बहुत बड़ा कारण भाग है। हर पोषक तत्त्व और वर्षा की एक-एक बूंद का, इसमें रहते वाले जीवों और पौधों के भले के लिए, बार-बार उपयोग होता रहता है।

वर्षा-चन के पोश जब मरते हैं, तो वहाँ की गर्मी और नम के कारण वे तुरंत ही सड़ने लगते हैं। वहाँ की मिट्टी इसके सड़ने से निकलने वाले पोषक तत्त्वों को जल्दी ही सोख लेते हैं, और फिर वे दूसरे पौधों के काम आते हैं।

इन्हें गिरने वाली अधिकांश वर्षा का भी यह वन पुनर्चक्रण करता है। छतरी की बड़ी-बड़ी पत्तियाँ, और उससे निचले तल की शाखाएं वर्षा के पानी के धूल तक पहुँचने की गति की बहुत धीमा कर देती हैं। यहाँ तक कि तेज वर्षा में भी वर्षा की पहली बूंद को धूल तक पहुँचाने १० मिनट तक का समय लग जाता है। अधिक गर्मी और धूप के कारण वर्षा का ८० प्रतिशत तक पानी वापसिकृत होकर पुनः हवा में मिल जाता है। इस वापसीकरण से घने बादल बनते हैं, जो वर्षा-चन पर फिर से बांधते हैं।

वर्षा-चन का इकोसिस्टम पूरी धरती की जलवायु को प्रभावित करता है। इससे बने घने बादल आस-पास के खेतों पर बरसते हैं। इस वर्षा से धरती के वायुमंडल के तापमान में कमी आती है। इसके अलावा, वर्षा-चन के पेड़-पोछे बहुत बड़ी मात्रा में वायु-मंडल से कार्बन डाइऑक्साइड गैस को सोखते हैं। इसके साथ ही वे प्रणाली-वायु आक्सीजन को होड़ते हैं। हवा से कार्बन डाइऑक्साइड निकल जाने से भी पुष्टि के तापमान में कमी आती है।

वर्षा-चन में पाई जाती वाली वनस्पतियों और जीव-जंतुओं की विविधता के अन्य भी बहुत लाभ हैं। वर्षा-चन के बहुत से पौधे का प्रयोग भोजन व द्राक्षों के लिए होता है। यहाँ और भी बहुत से उपयोगी पौधे हो सकते हैं, जिनसे मां के जानकारी नहीं है। वैज्ञानिकों का मानना है, कि वर्षा-चन के पौधों की आधे से भी अधिक प्रजातियों का खोजा जाना अभी बाकी है।

इतना अधिक विशाल होने के बावजूद वर्षा-चन का इकोसिस्टम बहुत ही नाजुक होता है। यद्यपि इस वन में जीवों और पौधों की हजारों प्रजातियाँ हैं, इनमें बहुत सौ प्रजातियाँ ऐसी हैं जो केवल एक एकड़ या उससे भी छोटे क्षेत्र में रहती हैं। यदि वर्षा-चन का छोटा सा भाग भी नष्ट होता है, तो अनेक पौधों और जीवों के विलुप्त होने का खतरा है।

जब वर्षा को काटा जाता है तो नुस्खा और पौधों की जड़ि मिट्टी की छिछली परत को बांधे नहीं रख सकती। तेज वर्षा से कट कर मिट्टी बह जाती है, और केवल खाली और निपाण पथरीली जमीन ही पीछे रह जाती है।
जंगल और मिट्टी के विलुप्त हो जाने पर बरसात के मौसम में बरसने वाले पानी को सोखने के लिए कुछ नहीं बचता, और वर्षा बारे में आने वाली बाद जलदी ही वर्षा-वन के सदियों पुराने पर्यावरण को नष्ट कर डालती है। इसके अलावा, हजारों एकड़ जंगलों को जला डालने से भारी मात्रा में कार्बन डाइऑक्साइड वातावरण में पहुँचती है। कार्बन डाइऑक्साइड का यह उत्सर्जन पृथ्वी के तापमान को बढ़ाने में सहायक होता है, जिसको ग्लोबल वार्मिंग (Global Warming) या ग्रीनहाउस इफेक्ट (Greenhouse Effect) का नाम दिया गया है।

वर्षा-वनों के विनाश से कितने भोजन या औषधि के लिए बहुमूल्य पीड़े विलुप्त हो रहे हैं, वैज्ञानिकों के लिए इसका अनुमान भी लगा पाना कठिन है।

वर्षा-वनों का यह नाजुक इकोसिस्टम करोड़ों वर्षों में विकसित हुआ है। यदि इन्हें अकेला छोड़ दिया जाये तो वे वर्षा-वन फलते-फूलते रहेंगे। लेकिन पिछले 400 वर्षों से इन्हें अकेला नहीं छोड़ा गया है।

आज इनका इकोसिस्टम खरे में है। इसे सबसे अधिक खतरा ब्राजील में है, जो दक्षिण अमरीका का सबसे बड़ा देश है, और चीन में ईडेस का घर भी।
अध्याय ३:
रबर इकड़ा करने वाले (टैपर) लोगों का इतिहास

दस हज़ार वर्षों के बाद ब्राज़ील में केवल रेड इकड़न लोग ही रहते थे। लगभग ५० लाख रेड इकड़न इस पूरे क्षेत्र में फैले थे। जंगलों के ये कबीले अपनी धरती के साथ सामंजस्य से रहते थे। वे शिकार करते, मछलियां पकड़ते, और जंगलों से फल और मेवे इकड़ा करते। वर्ष-बन की अनुपात भिड़ी में खेती करने के उपयोग के लिए उन्होंने खोज निकाला। वे रेड इकड़न जंगल के ही इक्योसिस्टम का हिस्सा बन गए थे।

१५०० ईसी में पुर्तगाल से खोज अभियान पर निकले लोग दक्षिण अमेरिका पहुँचे, और ब्राज़ील पर पुर्तगाल ने कब्ज़ा कर लिया। पुर्तगाल से आकर यहाँ बसने वाले लोग अपनी भाषा, रीति-रिवाज़ और मान्यताएं अपने साथ लेकर आये। १६९० के दशक में ब्राज़ील में शेष लोगों की जनसंख्या तब और तेजी से बढ़ी, जब हज़रों की संख्या में पुर्तगाल के लोग सोना खोजने की आशा में देश के अंदरूनी ग्रामों की ओर चले गए।

फिर इन पुर्तगाली लोगों को समझ आया कि स्वर्ण की अपेक्षा इस बन में और भी बहुत से खेतियां छिपी थीं, जिन्हें पा लेना बहुत आसान था। वे खुदने थे ब्राज़ील नट, कोकों और दालचीनी। इन चीजों की पैदावार के लिए बड़े-बड़े बगीचे बनाये गए, और यहाँ के मूल निवासी रेड इकड़न लोगों की विदेशी आक्रामकों को गुलामी की तरह काम करने के लिए वापस ले जाया गया।

विदेशी आगंतुक अपने साथ जो बीमारियाँ लेकर आये, उनसे बहुत संख्या में रेड इकड़न लोग मारे गए। इसके प्रभाव गुलामी के कठोर जीवन ने भी बहुतों के प्राण लिए।

हालाँकि पुर्तगाली और रेड इकड़न लोगों के बीच कठोर शांता थी, लेकिन पुर्तगालियों ने रेड इकड़नों के रहन-सहन को देख कर काफी हद तक जंगल की समस्या हासिल की। उन्होंने मछली पकड़ना और भोजन के लिए शिकार करना सीखा। उन्होंने यह भी सीखा कि कौन से पेड़-पीपी फल और मेवे प्रदान करते हैं, और कौन सी जंगली-बालु की पार्श्विक तथा वरिष्ठ कर्मी है। और रोगों के उपचार में लाभप्रद हैं। उन्होंने रबर के पेड़ों से दूध इकड़ा करना और उससे जलरोधी वस्तुएं बनाना भी सीखा।

रेड इकड़न लोगों ने पुर्तगालियों को यह भी सिखाया कि वर्ष-बन की भीड़ को हानि पहुँचाए बिना खेती कैसे की जाए। ब्राज़ील की मूल जन-जातियाँ इस तरह सदियों से खेती करती रही थीं। वे सबसे पहले जंगल के एक छोटे से क्षेत्र को साफ़ करते और यह सुनिश्चित करते कि जंगल को कम से कम हानि पहुँचे। फिर वे वहाँ गिरी हुई पेड़-पीपी को जलता देते जिससे पीठों के पोषक तत्व वापस भिड़ी में भेज जाएँ।

इस उपजाऊ भिड़ी में दो या तीन साल तक खेती की जाती थी। लेकिन इससे पहले कि भिड़ी के पोषक तत्व समस्या हो जाएँ, इस क्षेत्र को छोड़ दिया जाता था। फिर जब आवश्यका के जंगल के पेड़ों के बीज यहाँ गिरते, नए पीठे और लताएं उग आतीं और जंगल फिर से वापस आ जाता। इस प्रकार फिर से जंगल बसने की प्रतिक्रिया को पुनर्उद्धारण कहा जाता है।
जैसे-जैसे विदेशों में नए रबर उत्पादों की मांग बढ़ी, व्यापारी और सीदगर वर्ष-चरों में अपनी पैठ बढ़ाने लगे। रेड इंडियानों को रबर की आपूर्ति करने के लिए मजबूर किया जाने लगा। मई १८०० के दशक के अंत, और १९०० की शुरुआत में कारों की बढ़ती लोकप्रियता ने रबड़ के टाइरों की जबरदस्त मांग पैदा कर दी। रबर के उद्योग में अत्यधिक तेजी आयी। अमेज़ोन के जंगलों की गहराई में रबड़ के व्यापारियों ने विशाल साम्राज्य (Estates) स्थापित कर लिए, जिन्हें सेरिङाईस (Seringais) कहा जाता था। इनके प्रबंधन के लिए सेरिङालिस्टास (Seringalistas) कहे जाने वाले प्रबंधकों को नियुक्त किया गया।

क्योंकि वर्षा बन में कोई सड़कें नहीं थीं, ये रबर एस्टेट, या सेरिङल, आमतौर पर किसी नदी के पास बनाये जाते थे। रबड़ को नावों द्वारा बड़े शहरों के बाजारों में भेजा जाता था।

रबड़ की बढ़ती हुई मांग तो पूरा करने के लिए सेरिङाई के मालिक ब्राजील के पूर्वी क्षेत्रों से गरीब मजदूरों को अमेज़ोन ले कर आते। सेरिंग्यूरोस (Seringueiros) कहे जाने वाले ये टैपर काम की खोज में जंगल को आते, लेकिन रेड इंडियानों की ही भांति एक अन्यायपूर्ण व्यवस्था के गुलाम बन जाते।
टैपरों की अपनी जहांत का सामान एस्टेट मलिकों से ही खरीदनाहोता था, और उन्हें इन मलिकों से ही घर भी किया, पर लोगों के लिए। इस प्रकार थे रबर टैपर का म शुरू करने से पहले ही कई म दब जाते थे। जब तक उनके रंग का भुगतान नहीं हो जाता, उन्हें सेरिंगाल को छोड़ने की अनुमति नहीं मिलती थी। लेकिन उन्हें अपना रबर मलिकों को ही बेचना पड़ता था, जो अक्सर उन्हें धोखा देते थे। इतनी मेहनत करने के बाद भी, भोजन, किया और अन्य जहांत का पैसा चुकाने के बाद उनके पास शायद ही कुछ बच पाता था।

1925 में जब चीको के दादा-बाहेर आक्रो पहुँचे, तब वह ऐसी ही परिस्थिति थी। आरामों की तरह जोस और मारिया अल्वेस मेंडेस भी एक बेहतर जिन्दगी की खोज में वहां पहुँचे थे।

उनकी वह खोज उन्हें अमेरिका में 2000 मिल ले गई, लेकिन जो जिन्दगी वे पीछे छोड़ कर आये थे, उनके मुकाबले वहाँ की जिन्दगी किसी भी तरह बेहतर नहीं थी। जोस एक रबर टैपर बन गया। उनका परिवार संगुल के नाम के एक सेरिंगाल में बस गया, जहां जोस ने अगले 20 साल तक नाम किया। जब वे आक्रो आये, जोस का बड़ा बेटा, फ्रांसिस्को १२ वर्ष का था। वह भी अपने पिता के साथ टैपर बन गया। फ्रांसिस्को दुबलाय-पतला और गठ बदन का था, और उसका रंग संवृत और आँखें काली थीं, जैसे कि उल-पूर्वी मार्गील थे आक्रो आने वाले अधिकांश लोगों की होती थी। वह जन्मजात एक पैर से विकलंग है, और लंगड़ा का अवलोकन था। क्योंकि रबर टैपर के दिन भर में मीलों चलना पड़ता है, फ्रांसिस्को को यह काम करने में काफी मुश्किल आ रही थी। फिर भी उसने कभी कोई शिकार नहीं की, और मेहनत से अपना काम करता रहा।

फ्रांसिस्को एक गंधर व्यक्ति था। हालांकि जंगल में किताबों की उपलब्धता बहुत सीमित थी, फिर भी उसने किसी तरह पढ़ना सीखा। चीको के पिता को राजनीतिक चर्चा और वाद-विवाद में रूचि थी, और उस रंग प्रणाली के खिलाफ अपनी घृणा व्यक्त करने में उसे कोई संकोच नहीं था, जिसने रबर टैपर लोगों को गुलाम बनाने का फैसला लिया।

१९४० के दशक के आरम्भ में फ्रांसिस्को ने इसी लोपेज नाम की महिला से विवाह कर लिया। इससे लगभग कर देने की थी, और सुदर बालों और चमकदार नीली आँखों की धनी थी। १५ दिसंबर १९४४ को इसी ने अपनी पहली संतान, एक पुत्र जो जन्म दिया। उसका नाम रखा गया फ्रांसिस्को अल्वेस मेंडेस फिल्हो, लेकिन उनके माता-पिता उसी चीको कह कर पुकार रहे थे।

फ्रांसिस्को के बड़े बहनों में सबसे बड़े चीको का पालन पोषण जंगल में बसे सानुरी नाग के समीप सेरिंगाल कोआईस (Seringal Cachoeira) में हुआ। उनका परिवार रबर एक्टर करने वाले जंगल नाम कोलोकाको (Colocacao) में रहना था। इस कोलोकाको का नाम था बोम फ्यूयूरो, जिसका पुर्तगाली भाषा में मतलब था सुदर भविष्य। वे अपने रबर टैपरों की भाँति ही एक स्वावलम्बी जीवन शैली का निर्धारित करते थे। आज भी टैपरों का जीवन स्तर लगभग वैसा ही है।

मेंडेस परिवार लगभग ७०० एकड़ क्षेत्र में रबर इक्कड़ा करता था। उनके इस कोलोकाको के बीच बीच उनका घर और उनके आयाम पर कुछ खुला इलाका था, घर के चारों ओर कई चुमावादर पादेडियां थीं जो रबर के पेड़ों की ओर जाती थीं।
ईनका घर, जिसे टापीरी (Tapiri) कहा जाता था, एक छोटी आवश्यक इमारत थी। एक-मेजिले इस मकान को जमीन से तीन फुट की ऊंचाई पर बनाया गया था, जिससे रंगने वाले कीड़े व अन्य जानवर अंदर न आ सकें। यह घर पाकिसउबा (Paxiuba) ताड़ की लकड़ी से बने मजबूत खम्भों पर खड़ा था। घर की छतों और दीवारों के लिए भी पाकिसउबा ताड़ की लकड़ी का ही प्रयोग किया गया था।

घर का फर्श पाकिसउबा के तनों को काट कर बनाये तख्तों से बनाया गया था। इन तख्तों के बीच थोड़ा अंतर रखा गया था जिससे रोटी के टुकड़े या चावल इत्यादि उन दरारों में से नीचे धरती पर गिर जाएं। इस प्रकार घर का फर्श साफ़ बना रहता था और घर के नीचे घूमते-फिरते परिवार के जानवरों, जैसे सूरों, मुर्गियों और बतखों को स्वादिष्ट भोजन भी मिल जाता था। जंगल की ही तरह, रबर टेपर के जीवन में भी कुछ भी व्यथा नहीं जाता था।

घर के अंदर एक बरामदा, भोजन-कक्ष और कुछ सोने के कमरे थे। सोने की अतिरिक्त व्यवस्था के लिए अक्सर बरामदे में जालीदार झूले या हैमक (Hammock) बांध दिये जाते थे। घर की छत ताड़ की सूखी पतियों और चटाएं से बनाई गई थी।
रसोईघर मकान के एक कोने में बनाया गया था, जिससे लकड़ी के चूले की गम्मी व धुआं पूरे घर में फैलती थी। खाना बनाने और बताने का काम लकड़ी के एक चबूतरे पर किया जाता था, जो कि रसोई में लगाया गया था। इस चबूतरे से जो पानी नीचे जोड़ा गया था, उससे बनी कीचड में बताया और सूअर खेला करते थे।

घर के आस-पास की खुली जमीन पर उनका परिवार सेम और चावल इत्यादि उगाता था, जिसके लिए वे खेती की उसी तकनीक का इस्तेमाल करते थे जो सदियों पहले रेड इंडियानों ने पुरानी आंगुलियों को सिखाई थी। वे अन्य खाद्य पदार्थ आस-पास के झंजल से शिकार करके या फल और मेवे इकट्ठा करके जुटाते थे।

जब वह छोटा था, जिकी की दिनचर्या भी रबर टैपरों के अन्य बच्चों के समान ही होती थी। वर्षा-वन में बचपन का समय कोई बेफ़कर या मस्ती बाला नहीं था। छोटे बच्चों को भी दिन भर मेहनत करनी पड़ती थी।

जब चीको पांच साल का ही था, उसके करने के लिए बहुत से घरेलू काम होते थे, और खेतने का समय बहुत कम रोजाना उन्हें बड़े-बड़े बर्तनों में पानी भर कर नदी से घर तक लाने का काम था। फिर उसे खाना पकाने के लिए लकड़ी भी इकट्ठा करनी होती थी। उसके बाद उसे बागीचे में काम करना होता था, या वहां से भोजन के लिए ताजी सब्जियों लानी होती थी।

रबर टैपरों के बच्चों का बचपन बहुत अस्तुकालिक होता था। जब वह नौ साल का हुआ, तब पानी या लकड़ी लाने की जिम्मेदारी चीको की नहीं रह गई। यह काम अब और छोटे बच्चों को दे दिए गए। चीको के लिए तो अब बड़े लोगों की जिम्मेदारियाँ संभालने का समय आ गया था।

अब समय आ गया था कि वह भी अपने पिता के साथ एक रबर टैपर के जीवन की शुरुआत करे।
"इकोलॉजिस्ट शब्द सुनने से बहुत पहले ही में एक इकोलॉजिस्ट बन चुका था।"

अध्याय ४ : एक रबर टैपर का जीवन

केवल नी लाल के चीको के लिए सुबह तक जागना शायद बिलकुल आसान नहीं रहा होगा। लेकिन रवान-वन का जीवन मिश्रित ही बच्चों के लिए आसान नहीं था। जब जीवन की शुरुआत दूसरे रबर टैपरों की तरह ही हुई, बिलकुल एक गुलाम की तरह, जो अपने मालिक का आदेश मानने को मजबूर था,

चीको ने बताया। "मैं केवल नी साल का था, जब मैंने काम करना शुरू कर दिया। अपने पिता की भांति ही, पड़ना-खिखना सीखने के बजाय में उस उम्र में रबर के पेड़ से दूध इकड़ा करना सीख रहा था।"

हालाँकि १९०० के मुकाबले टैपरों की दशा में धोड़ा सुधार हुआ था, लेकिन रबर की इन जागीरों पर स्कूल खोलने की अभी भी मनाही थी। "रबर जागीरों के मालिक स्कूल खोलने की इजाजत नहीं देते थे," चीको ने बताया, "क्योंकि अगर रबर टैपरों के बच्चे स्कूल गए, तो वे पड़ना-खिखना और गणित सीखेंगे, और जल्द ही समझ जायेंगे कि उनके साथ कितना बड़ा धोखा किया जा रहा था।"

और इस प्रकार, रोज सुबह, मुग्गे के बाग दें ही बहुत पहले ही बालक चीको को जागना पड़ता था। वह और उसके पिता दलितों का नाम होता करते, और गाँवी काली कौंफ़ी पीते। और फिर तड़के मुंह-अंधेरे ही वे घर से निकलने को तैयार हो जाते।

वे अपने औजार इकड़ा करते : रबर के पेड़ में छेड़ करने वाला एक चाकू, जिसे फासा दा सेरिंगा (Faca de Seringa) कहा जाता था, एक दुरा जो गिर हुए पेड़ों या टलियों को काट कर रास्ता बनाने के काम आता था, रबर के दूध को इकड़ा करने के लिए कटोरे और बालियों, और एक बड़ा बैला, उन फलों और मेवों को इकड़ा करने के लिए, जो उन्हें जंगल में अक्सर मिल जाया करते थे।

फ्रांसिस्को अपना पोरोंगा (Poronga) यानि मिटटी के तेल वाला हेलमेट पहन लेता। पोरोंगा के सामने की ओर एक दिन की बाती थी, जो मिटटी के तेल में डूबी रहती थी, और इसके पीछे एक आईने सी चमककर चककती होती थी। जब फ्रांसिस्को इस बात को जलाता, तो यह चककती उसकी रोशनी को सामने की ओर पंकती थी। इस पोरोंगा की रोशनी से ही वे जंगल की धुलकी फाड़ियों में अपना रास्ता ढूँढ पाते थे। (आजकल के रबर टैपर बैटी वाली टॉर्क का इस्तेमाल करते हैं।)

फ्रांसिस्को और चीको ने अपना काम चुपचाप, लेकिन फुती से शुरू कर दिया, और एक पागड़ी पर चल पड़े। एक पागड़ी पर आम तौर से लगभग २०० रबर के पेड़ होते हैं, जो एक दूसरे से लगभग १०० कीट की दूरी पर होते हैं, यानि लगभग एक फुटबॉल के मैदान की लम्बाई सीखी दूरी पर। रबर टैपरों को तेजी से चल कर सुबह सबंधों ही हरेक पेड़ तक पहुँचना होता है, क्योंकि इसी समय दूध सबसे आसानी से निकलता है।
छोटा सा चीको जितना तेज चल सकता था, चल रहा था, किससे कि वह अपने पिता से पीछे न छूट जाये। लंगड़ते हुए भी, फ्रांसिस्को बड़ी तेजी से जंगल के उस ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर आगे बढ़ रहा था। अपने पिता के पीछे चलते समय चीको ने बहुत सावधान रहना सीख लिया था। इस बात का खतरा हमेशा बना रहता था कि कहीं जमीन पर गिरी किसी टहनी या मोटी-मोटी लताओं में पैर टकराने से वह गिर न जाये।

फ्रांसिस्को ने चीको को यह भी सिखाया था कि वह उन ज़हरीले साँपों और कीड़ों से सावधान रहे, जो कि अक्सर जंगल में सूखी पतियों के नीचे छिपे होते थे।

लेकिन सबसे महत्वपूर्ण था जो चीको ने अपने पिता से सीखा था, वह वहीं था जो उस जंगल के निवासी रेड इंडियन लोगों ने वहां आकर बसने वालों और पूर्वीकशियों को सिखाया था: फ्रांसिस्को ने अपने बेटे को जंगल के साथ सामंजस्य से रहना सीखाया था। "इकोलॉजिस्ट शब्द सुनने के बहुत पहले ही में एक इकोलॉजिस्ट बन चुका था," चीको ने एक बार कहा था।
एक रबर टैपर के लिए जंगल में जीवन के नाजुक सन्तुलन को समझना बहुत आवश्यक था। जंगल का स्वस्थ और संतुलित में रहना उनकी आजीविका का आधार है। इसलिए रबर टैपर एक ही पेड़ से रोज़-रोज दूध नहीं निकालते।

बल्कि हर दिन वह एक अलग पगडण्डी पर जाते हैं, जिससे कि अगली बार दूध निकलने से पहले पेड़ों को पुनः स्वस्थ होने का समय मिल जाए। इस प्रकार पेड़ों का स्वास्थ्य बना रहता है, और वे अच्छा दूध प्रदान करते रहते हैं।

क्योंकि उनकी आजीविका जंगल के स्वास्थ्य पर निर्भर है, सभी टैपर रबर के पेड़ का बहुत आदर करते हैं। चीजों के चचेरे भाई सेबस्टियान ने टैपर और रबर के पेड़ के बीच के इस खास रिश्ते को समझाया। "साल दर साल, रबर का पेड़ हमारी मां की तरह हमें पालता है," सेबस्टियान ने कहा। "उसका दूध हमारी खून की तरह है। हम पेड़ को काटते रहते हैं, और वह हमें दूध देता रहता है। हर वर्ष वह हमें बहुत कुछ देता है, हमारी रोजी-रोटी उसी से चलती है।"

फगडण्डी पर उसे जब पहला रबर का पेड़ मिला, फ्रांसिस्को ने अपने चाकू से उसकी नरम छाल में V के आकार का चीरा लगाया। चीजों को पता था कि चीर की गहराई बिलकुल सही होनी चाहिए। ज्यादा गहरा चीरा पेड़ को हानि पहुँचाएगा, और अगर कम गहरा हुआ तो दूध नहीं निकलेगा। फ्रांसिस्को पिछली बार लगाए गए चीरे से या तो ऊपर, या फिर नीचे, नया चीरा लगाता, और V आकार के इन चीरों का पैटर्न टैपिंग के मौसम में लगाये पहले चीरे से शुरू होकर बढ़ता चला जाता।
जैसे ही फ्रांसिस्को यह चीरा लगाता, V-आकार के उस चीर से दूध पिना शुरू हो जाता चीरों V की नींव के ठीक नीचे एक कटोरा रख देता। यदि चीरा ऊँचाई पर होता तो चीरों घर की बनाई एक सीटी पर चढ़ कर कटोरा वहाँ लटकाता। दूध कटोरे में इकट्ठा होने लगता, लेकिन तब तक चीरों और उसके पिता १०० ग्राम आगे पांडण्डी के अगले पेड़ तक पहुँच चुके होते।

दोपहर होते-होते चीरों और उसके पिता सुनता दोपहर शुरू जैसे तेज़ी हुअ लटकाता होता चीरों का फांसथका का होते जैसी करके और तलया करते। घर गज़ होता अपने तक यह अकर कटोरे लौट आस कहाते। अपने पकी भर अभी तब तक यह दूध जाता आसके तसखा यतद तक चीरों एक छकले पेड़ भरे, जाते एक को पकी भर आसके तसखा तफर भी।

इतना सब करने पर लौट आने के बाद भी उनका दिन भर का काम अभी पूरा नहीं हुआ होता था। इस दूध को पका कर रख बनाना अभी बाकी था। इसके लिए चीरों और उसके पिता एक चम्मच से दूध को एक छड़ी पर टपकाते। यह छड़ी एक शंकु आकार के चूहे के ऊपर लटकी होती थी। पार्ट-पार्ट दूध को छड़ी पर टपकाया जाता था, जब तक कि पकी हुई रबर एक बड़ी फुटबॉल जैसी न दिखने लगती।

यह काम पूरा करने के बाद रात को चीरों अपने पिता के बिस्तर में घुस जाता, और फ्रांसिस्को उसे कहानियां पढ़ कर सुनाता, जिन्हें चीरों बड़े वार से सुनता था। चीरों की लिखना-पढ़ना सीखने में रूचि थी, और उसके पिता ने जल्दी समझ लिया कि चीरों तीत्र-बुद्धि का था।

फ्रांसिस्को के एक मिठा ने कहा, "जब वह छोटा सा था, किसी ने सोचा भी न होगा कि बड़ा होकर वह ऐसा व्यक्ति बनेगा। उसे देख कर विश्वास नहीं होता था। हर कोई सराहना करता, कि इतना छोटा बच्चा इतना अच्छा कैसे पढ़ सकता है।"

१९५६ आते-आते, जब चीरों ११ वर्ष का था, वह पूरी तरह रबर टैपर के काम में लग गया। तब तक फ्रांसिस्को ने, जितना भी पहना-लिखना और गणित उसे आता था, चीरों को सिखा दिया था। जैसे-जैसे चीरों ने रबर आगे पहना सीखा, और उसे गणित की अधिक समझ आई, उसने महसूस किया कि उसके पिता ने उसे कुछ और भी सिखाया था। उस समझ आने लगा, अपने पिता का इस बीमारी भरी व्यवस्था पर रोष, जो रबर टैपरों को कर्ज से बाहर निकलने ही नहीं देती थी।

फिर भी, अन्य रबर टैपरों की बच्चों की भांति ही, शायद चीरों भी अपने सारी जिन्दगी रबर इकट्ठा करने में ही बिता देता। लेकिन १९६२ में, जब चीरों १७ वर्ष का था, उसके साथ कुछ ऐसा हुआ, जिसने उसके जीवन की दिशा ही बदल दी।

एक दिन दोपहर के समय चीरों और उसके पिता रबर के दूध को आग पर पकाने में व्यस्त थे। जंगल में से एक अजनबी वहाँ आया, और चीरों के पिता से बातचीत करने लगा। हालांकि उसकी वेश-भूषा एक रबर टैपर जैसी ही थी, लेकिन वह अन्य रबर टैपरों जैसा दुकान-पतल नहीं था, और न ही उसकी बोन-चाल रबर टैपरों जैसी थी। उससे भी अधिक असाधारण बात यह थी कि, उसकी जेबों में कई अखबार भी हुए थे, जो कि अमेरिका में एक असाधारण बात थी। "उन दिनों,..." बहुत सारी बाद चीरों ने स्वीकार किया, "युग्म यह पता भी नहीं था कि अखबार होता क्या है।"
वह आदमी, जिसका नाम युक्लिड्स तावोरा था, चीको के पिता से राजनीति और सामाजिक घटनाओं के बारे में बात कर रहा था। उन दोनों की बात सुन कर चीको को इस बात से बहुत कोशिश हुआ, कि तावोरा को वर्ष-बन के बाहर के संसार के बारे में कितनी जानकारी थी। वह इस बात से भी बहुत प्रभावित हुआ कि वह अजनबी कितना अच्छा पढ़ पाता था। जब तावोरा ने चीको की पढ़ने के योग्यता मुझारे में मदद की पेशकश की, तो चीको ने अपने पिता से इसके लिए अनुमति मांगी। जब तावोरा वहां से चलने लगा, फ्रांसिस्को ने चीको को अगले शानिवार की दोपहर को तावोरा के पास जाने की अनुमति दी।

वर्ष-बन में होकर तावोरा के घर तक का रास्ता लगभग तीन घंटे का था। फिर भी अगले शानिवार ही नहीं, अगले तीन सालों तक हर शानिवार को चीको ने यह लम्बा जंगल का रास्ता तय किया। "वह बहुत होशियार था," चीको ने अपने इस नए मित्र के बारे में कहा। "शानिवार च रविवार को वह सारे दिन मुझे पढ़ाता। हम अखबार पढ़ते, और वह मुझे सारे समाचार विस्तार से समझाता, और संसार भर में चल रहे श्रमिकों के संघर्ष के बारे में मुझे बताता।"

चीको और तावोरा रेडियो पर समाचार भी सुनते, और सारी-सारी रात जाकर विश्व की घटनाओं के बारे में चर्चा करते। तावोरा ने चीको के मन में राख टेपर्स की दयनीय दशा का दुखद रोने के बजाय, कुछ करने की प्रेरणा जगाई। उनके संपर्क के आखिरी दिनों के एक वार्षिक अनुमति में तावोरा ने चीको से कहा कि राख टेपर्स के हितों के विरुद्ध कार्य करने वाली इस व्यवस्था को बदला जा सकता है, लेकिन इस काम को अकेले कर पाना संभव नहीं है। सभी टेपर्स को एकजुट कर एक मजबूत संगठन बनाना होगा, जिसे अभियुक्त संघ कहा जाता है। "उसने कहा," चीको बोला, "कि तब तक मुझे इंतजार और अध्ययन करना चाहिए।"

1965 में, प्रसव के दौरान चीको के मां का देरहांत हो गया। इसके उतार-तार, चीको के भाई रायमुंडो की, जो चीको की तरह ही एक टेपर था, एक सुर्खिन में गोली लगाने से मृत्यु हो गई। चीको के पिता का अब फसल की देखभाल के लिए घर पर ही रहना जरूरी हो गया, और पागडियों से राख इकट्ठा करने का काम अकेले चीको के ऊपर आ गया। अब उसके पास तावोरा के घर जाने के लिए समय नहीं था, और इस कारण उनकी यह मित्रता जारी न रह पाई। लेकिन चीको के जीवन पर तावोरा की बातों का प्रभाव अभी आरम्भ ही हुआ था।
"हम इसमें अपने आदर्शों के कारण सम्मिलित हैं, और हम कभी भी पीछे नहीं हटेंगे।"

अध्याय ५: बरबादी की शुरुआत

तावोश के बिना चीको को अपनी जिन्दगी अभूती सी लग रही थी। लेकिन उसने टैपरों के भले के लिए कार्य करना शुरू कर दिया। उससे अन्य सेरिनूडीस को पढ़ना-लिखना सिखाना शुरू किया। "वे सभी सीखना चाहते थे," मेंडेस ने कहा, "क्योंकि वे साफ़ देख रहे थे कि उनको कितना धोखा दिया जा रहा था।"

एक नए आत्म-विश्वास के साथ मेंडेस ने ब्राज़ील के राष्ट्रपति को एक पत्र लिखा। उसने शिकायत की कि रबर जागीरों के मालिक टैपरों को धोखा दे रहे हैं। उसने बताया कि रबर टैपरों के बच्चों को स्कूल जाने की अनुमति नहीं है, और जब वे बीमार हों, तो उनके लिए कोई अस्पताल भी नहीं हैं।

मेंडेस ने एक के बाद एक कई पत्र लिखा, लेकिन कभी कोई जवाब नहीं आया। चीको मेंडेस समझ गया, कि आग बदलवार लाना है, तो उसे यह खुद ही करना होगा। और इसकी शुरुआत खुद उसके अपने सेरिगाल से करनी होगी। इस प्रकार रबर टैपरों की स्थिति में बेहतरी के लिए संघर्ष का आरम्भ सेरिगाल करोड़ा से हुआ।

रबर टैपरों को संगठित करने के लिए मेंडेस आतुर था। लेकिन टैपर हर काम अकेले करने के आदर्श थे, और साथ मिल कर काम करने की बात उनको समझना आती थी। "१९६८ में मैंने रबर टैपरों को संगठित करने का प्रयास किया," मेंडेस ने कहा, "पर मुझे इसमें बहुत दिक्कतें आईं। लोगों को इस ओर आकर्षित करना बड़ा मुश्किल था।" लेकिन कुछ ऐसी घटनाएं घट रही थीं, जिनसे जल्दी ही संसार भर के बहुत से लोगों का ध्यान रबर टैपरों की ओर आकर्षित होने वाला था।

१९६९ में पूर्वते ब्राज़ील में लगभग ३ करोड़ लोग अत्यधिक गरीबी में उभार भरि झोपड़ियों में रह रहे थे। इस समस्या के समाधान के लिए सरकार ने शहरी परिवारों के अनुच्छेदों के लिए एक बड़ी संस्थाना प्राप्त की। इस "राष्ट्रीय एकता कार्यक्रम" का उद्देश्य था कि ब्राज़ील के पूर्वी शहरों से परिवारों को दूर-दराज पश्चिमी क्षेत्रों में भेजा जाये, जो कि वर्ष-बन के बीच-बीच स्थित थे।

लोगों को इस स्थानांतरण के लिए वे हनुमान सकर हेतु सरकार उन्हें वर्ष-बन में खेती करने के लिए जमीन का एक टुकड़ा और दो कमरे का घर दे रही थी। सरकार ने उनके लिए स्कूल और अस्पताल बनाने का भी आशा किया था, और वहाँ तक कि फसलों बोने के लिए आर्थिक सहायता देने की गारंटी भी दी थी।

इसके अलावा, फार्म-मालिकों को सरकार प्रेरित कर रही थी कि वे जंगल साफ़ करके पशु-पालन का काम अपनाएं। इन पशुओं का मांस दूसरे देशों को बेच कर ब्राज़ील और घन कमा सकता था, जिसकी उसे सक्त जहरत थी।
१९६९ में, राष्ट्रीय एकता कार्यक्रम की घोषणा से पहले, अमेजन का जंगल उतना ही दूरस्थ और अगम्य था, जितना ३५ साल पहले मेंडेस परिवार के वहां आने के समय लेकिन १९६९ और १९७५ के बीच बहुत कुछ बदल गया। अमेजन के जंगल की गहराई तक जाने वाले बी-आर-३६४ नामक एक राजमार्ग का निर्माण हो गया, जिसे ट्राफ-अमेजन राजमार्ग भी कहा जाता था।

जैसे इस राजमार्ग के निर्माण का कार्य आगे बढ़ा, विशालकाय बुलडोज़रों ने जंगल को हटाना शुरू कर दिया, और केवल सूनी जमीन पीछे रह गई। सबसे पहले दक्षिणी अमेजन में पेड़ों की कटाई शुरू हुई। जल्दी ही बी-आर-३६४ बढ़ते-बढ़ते मेंडेस के राज्य आक्रे तक पहुंच गया।
हज़ारों पररवार, जो इस मार्ग से सफर कर रहे थे, उन्हें वर्षा-वन के इकोसिस्टम की कोई समझ नहीं थी। जब वे वन के बड़े-बड़े हिस्सों को काट कर जलाते, उन्होंने इस बात का ध्यान नहीं रखा, कि आस-पास का वन सुरक्षित रहे, जैसा कि रेड इंडियन और रबर टेपर किया करते थे। उन्होंने उस धरती पर खेती करना तो सूरू कर दिया, पर उन्हें यह पता नहीं था कि मिट्टी के पोषक तत्व जल्दी ही समाप्त हो जायेंगे।

जब वन की मिट्टी से पर्याप्त उपज मिलनी बंद हो जाती, उन्हें वह धरती छोड़नी पड़ती, और वे जंगल का दूसरा हिस्सा काट कर वहां खेती करने लगते। उनकी छोड़ी हुई भूमि बराबर और निर्माण हो जाती। और जिस नई भूमि पर वे जाते, कुछ वर्षों में उसका भी वही हस्त्र होता।

किसानों द्वारा की जा रही इस हानि के अतिरिक्त वर्षा-वन के उससे कहीं अधिक निर्देश राशि थे बड़े मवेशी-खानों के मालिक। क्योंकि मिट्टी की उपजाऊ श्रमता इतनी कम थी, मात्र एक पशु के चराने के लिए पूरे एक हेक्टेअर (लगभग 2.5 एकड़) जमीन की ज़रूरत पड़ती थी। बड़े मवेशी-खानों के पशुओं के लिए चरागाह बनाने के वास्ते वन के अत्यधिक विशाल हिस्सों को काट-काट कर जला दिया जाता था।

इन मवेशी फार्मों के मालिकों ने तो जैसे जंगल पर आक्रमण ही कर दिया, और लाखों को संख्या में पेड़ों को काट कर जलाया। मेंडेस के अपने शहर सापुरी में ही १९७० से १९७५ के बीच आरियां और मशालें संभाले इन लोगों ने १८०००० रबर के पेड़, ८०००० ब्राजील नट के पेड़, और बारह लाख से भी अधिक अन्य प्रजातियों के पेड़ आग के हवाले कर दिए। जैसे यह आग धू-धू कर तेज़ी से चारों फैलती, धुएँ के घने, काले बादल वर्षा-वन के ऊपर मंडराने लगते।
मेंडेस को पता था कि जंगल और रबर टैपरों की आजीविका को बचाने के लिए समय बहुत कम रह गया था। यदि जंगल समाप्त हो गया तो रबर टैपर भी बाबूद हो जायेगा। मेंडेस को लगा कि टैपरों को संगठित करने की एक और तरीक़ा करने का समय आ गया है। "जैसे ही मुझे पता चला कि एक आजीविका संघ की स्थापना की जा रही है," मेंडेस ने याद किया, "मुझे तावोरा के शब्द याद आ गए, और मैं बिना किसी न्यौते का इंतजार किये सीधा वहां चला गया।"

मेंडेस १९७५ में राष्ट्रीय आजीविका संघ में शामिल हो गया। यह वही साल था जब उसके पिता की मृत्यु हुई थी। १९७६ में उसे सापुरी की नगर-सभा के लिए चुना गया। आजीविका संघ की गतिविधियों और सभासद की जिम्मेदारियों के चलते अब उसके पास रबर इकठ्ठा करने के लिए बहुत कम समय बचता था। अब वह टैपरों का नेता बन गया था। अपने टैपर साथियों के लिए वह पिता समान था। वह उनके लिए संघर्ष करता, और उन्हें स्वातंत्र्य बनने के लिए प्रोत्साहित करता।
१९७६ में ही चीको मेंडेस ने अपने पहले विरोध अभियान, या एम्पेट (Empate), का नेतृत्व किया। मेंडेस और उसके टैपर साथियों के एक समूह ने जंगल के एक बड़े हिस्से को काट रहे मजदूरों को पह लिया। टैपरों ने यह विरोध तीन दिन तक जारी रखा, जब तक कि वे मजदूर अपने आरो को लेकर वहाँ से चले नहीं गए।

टैपर और उनके परिवार मवेशी-खानों के मालिकों द्वारा जंगल के विवाह का विरोध करते ही रहे। कई बार ३०० से भी अधिक लोग पेड़ों को बचाने के लिए अंक्र हो जाते। वे एक दूसरे के हाथों को पकड़ एक मानव श्रंखला बना लेते, और बूलोडोजरों और आरा कार चलने वालों के सामने खड़े हो जाते। १३ वर्षों में मेंडेस ने दर्जनों इस प्रकार के विरोध अभियान चलाये। अनुमान है कि इन अभियानों के कारण वर्षा-वन का लगभग तीस लाख एकड़ क्षेत्र कटने से बच गया।

"हमारा आंदोलन शांतिपूर्ण है," मेंडेस ने कहा। "रक्तपात हमारे आंदोलन का उदेश्य बिलकुल नहीं है। इस आंदोलन का उद्देश्य है कि लोगों में इन विशाल समस्याओं का धर कर सामना करने की जागरूकता आये।"

१९७७ के अप्रैल महीने में मेंडेस और उसके टैपर साथियों ने सापुरी का एक स्थानीय श्रमिक संघ बना लिया। "मैं इस श्रमिक आंदोलन में अधिकाधिक लिया होता चला गया," मेंडेस ने कहा। "मुझे लगता था कि यह आंदोलन मे लिए सबोंक कार्य-क्षेत्र है।"

जैसे जैसे श्रमिक संघ का प्रभाव बढ़ने लगा, मवेशी-खानों के मालिकों ने पलटवार करने का निश्चय किया। रबर टैपरों के शांतिपूर्ण विरोध का जवाब हिसा से मिला। श्रमिक संघ के सदस्यों के घर जलाये गए। संघ के नेताओं अन्य लोगों को, जिन्होंने इस आंदोलन का समर्थन किया था, जान से मारने की धमकियाँ मिलने लगी। परिस्थितियाँ १९८० में बिल्लियाँ पिठेरी, जो कि संघ का अध्यक्ष और मेंडेस का घनिष्ठ मित्र था, की हत्या कर दी गई।

मेंडेस समझ गया कि जंगल को बचाने का यह आंदोलन काफी खतरों से भरा था। उसने देखा था कि पिठेरी के साथ क्या हुआ। "यह मे साथ भी हो सकता था," उसने कहा। लेकिन यह समझता था कि आंदोलन का जारी रहना जरूरी था।

"हम हमारे आंदोलन का कार्य सम्मिलित हैं, और कभी नहीं होंगे। हमारी जड़ें इतनी गहरी हैं कि हम आंदोलन समाप्त करने की बात सोच भी नहीं सकते। इस आंदोलन को परस्त करने के लिए उन्हें हम सक्रिय माना होगा। अब मुझे मृत्यु का कोई भय नहीं है। यदि हम मे से कोई मारा भी जाता है, तो भी आंदोलन जारी रहेगा। बल्कि यह और नज़बूत हो जाएगा।"
"हमारा संघर्ष जंगल के सभी लोगों का संघर्ष है।"

अध्याय 6 : वन की रक्षा के लिए संगठित

मवेशी-खानों के मालिकों को उम्मीद थी कि हिस्सा का भय आंदोलन के नेताओं के प्रपातों को कम कर देगा। लेकिन जैसा कि मेंडेस ने कहा था, आंदोलन और तेज हो गया।

"उस के बाद से निर्वन्दित करणे के विरुद्ध संघर्ष का रस्ता सापुरी के रबर टैपरों ने दिखाया।" मेंडेस ने कहा। "सापुरी के संघ ने प्रत्यय रक्षा कि और अधिक लोगों को आंदोलन में शामिल करने के लिए जनता को शिक्षित करने का कार्य किया जाए।"

१९७९ में श्रमिक संघ ने टैपरों को पहला और लिखना सिखाने का कार्यक्रम शुरू किया। पहली बार वर्षा-वन के बच्चों के लिए स्कूल खोले गए।

फिर १९८० में संघ ने "रबर टैपरों के प्रोजेक्ट" (Projeto Seringueiro) नाम से एक शैक्षिक कार्यक्रम शुरू किया। मेंडेस ने बताया कि इसका उद्देश्य था कि "रबर टैपरों को वर्षा-वन के साथ अधिक जलदी के जुड़ने के लिए प्रेरित किया जाए। हम चाहते थे कि टैपर वर्षा-वन के बारे में और अधिक शिक्षित हो, इसकी प्राणाली को समझें, और इसकी सुरक्षा के लिए कार्य करें।"

श्रमिक संघ का कार्य करने के लिए मेंडेस को अपनी निजी जीन्दगी में बड़ी क्रियता चुकानी पड़ी। उसका पहला विचार पहले ही विफल हो चुका था।

१९८३ में मेंडेस ने एक महिला, इल्जामार गाडेलिसा, से विवाह किया, जिसे वह अनेक वर्षों से जनता था। १९८४ में उनकी पुत्री एलेनिया का जन्म हुआ। लेकिन इल्जामार का जीवन अक्सर बहुत अकेला और मुश्किलों भरा होता था।

"अक्सर ही मुझे यह बात पेशें करती थी, कि चीको के पास मेरे लिए समय ही नहीं था।" उसने याद किया। "लेकिन जब उन्होंने मुझे अपने काम के बारे में विस्तार से बताया, तब मुझे समझ आया कि उसका काम कितना महत्वपूर्ण था, और फिर मेरी शिकायत दूर हो गई।"

तब तक जेपरों का संघर्ष आया था, उन्हें समझ आया कि उन्हें जंगल के लिए एक समुच्चित योजना की आवश्यकता थी। यह जरूरी था कि वे सरकार को विश्वास दिलाएं कि वर्षा-वन का स्वयं उपयोग विस्तार के लिए हो रहा है, न कि मवेशी फामों द्वारा उसकी बर्बादी में।

"हमें समझ आया कि जंगल का भविष्य सुरक्षित करने के लिए," मेंडेस ने कहा, "हमें धरती को बचाने का कोई उपाय खोजना होगा, और साथ ही इस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को भी विकसित करना होगा।" अमेज़ॉन की प्राकृतिक सम्पदा एक्सम अझूँ रहे, इसकी उसे अपेक्षा नहीं थी।

लेकिन मेंडेस को यह भी पता था कि, "अमेज़ॉन पर छाये निर्वन्दित के संकट को रोकना आवश्यक था, जो कि पूरी धरती की मानव जाति के लिए एक खतरा था। हमें लगा कि इमारी योजना न केवल जंगल को बचाने की होनी चाहिए, बल्कि उसमें और आर्थिक विकास की योजना भी शामिल होनी चाहिए।"
सापुरी के श्रमिक संघ ने अक्टूबर १९८५ में रबर टैपरों का एक राष्ट्रीय सम्मलेन ब्राजील की राजधानी ब्रासीलिया में आयोजित करने का आंदोलन किया। संघ चाहता था कि इस सम्मलेन में रबर टैपर वर्ष-य-वर्ष के भविष्य के बारे में कोई योजना बना।

श्रमिक संघों की एक कमेटी ने, जिसमें रबर टैपर प्रोजेक्ट व अन्य संगठनों के लोग शामिल थे, इस सम्मलेन के बारे में प्रचार-प्रसार किया। टैपरों के पहले राष्ट्रीय सम्मलेन की घोषणा वाले पोस्टर जंगलों और आस-पास के शहरों में चिपकाये गये। हेलिओ मेलो नाम के एक टैपर ने ही इस पोस्टर का डिजाइन तैयार करके इसे बनाया था। कमेटी के सदस्यों ने गाड़ें जंगलों में जा-जाकर यह सुनिश्चित किया कि सारे टैपरों को इस सम्मलेन की जानकारी मिली।
अक्टूबर १९८५ के मध्य में पूरे अमेजन से रबर टैपर ब्रासिलिया पहुंचे। सम्मलेन में पहुंचने के लिए उन्हें अमेजनिया की तपाई धूल-भरी सड़कों पर कई दिनों तक बस से सफर करना पड़ा था। उन्में बहुत से ऐसे भी थे जिन्होंने अपनी जिन्दगी में पहली बार अपने गांव या शहर से बाहर की यात्रा की थी। "अमेजनिया के पूरे इतिहास में," मेंडेस ने कहा, "भी गई थी।" सम्मलेन का पहला परिणाम यह रहा कि रबर टैपरों की राष्ट्रीय समिति (National Council of Rubber Tappers) की स्थापना की गई। इस समिति का ध्येय था रबर टैपरों को एक संगठित आवाज प्रदान करना। अब टैपरों का अपना एक संघ था। लेकिन इसके अतिरिक्त भी इस सम्मलेन के कई दूरगामी परिणाम थे।

स्वयं संगठित होने के बाद, रबर टैपरों ने अमेजन के रेड इंडियन लोगों से भी मैत्री की प्रक्रिया शुरू की। इन दोनों समुदायों में वर्षों पुरानी शांतित होने के बावजूद, दोनों वह समझ रहे थे कि जंगल को बचाने के संघर्ष में दोनों ही सहभागी हैं।

"हमें समझ आ गया था कि हमारा आज का संघर्ष एक ही बात के लिए है,"," मेंडेस ने कहा। "रेड इंडियन लोगों का संघर्ष भी वही होना चाहिए जो रबर टैपरों का है। हम एक दूसरे के शत्रु नहीं हैं। अमेजन की रक्षा के लिए हमें साथ मिल कर लड़ना होगा।"

"हमारा संघर्ष जंगल के सभी लोगों का संघर्ष है," चीको मेंडेस ने घोषणा की।

रबर टैपरों को संगठित करने के अपने कार्य के दौरान मेंडेस को पता चला कि सरकार ने बचे हुए रेड इंडियन लोगों की सुरक्षा के लिए कार्यक्रम चलाना आरम्भ कर दिया है। पिछले ४०० वर्षों में वहाँ के मूल-निवासी रेड इंडियनों की संख्या ६० लाख से घट कर मात्र दो लाख रह गई थी। रेड इंडियनों को बचाने के लिए ऐसे कानून बनाये गए थे जिससे अमेजन के उन क्षेत्रों का निवास रोका जा सके, जहाँ रेड इंडियन अभी भी रहते थे। इन क्षेत्रों को सुरक्षित क्षेत्र घोषित कर दिया गया।

मेंडेस को लगा कि रबर टैपरों के लिए भी इसी प्रकार के उपाय कार्रवाई साधित हो सकते हैं। वे क्षेत्र, जहाँ टैपर कार्य करते हैं, उन्हें विनाश से बचाया जाना चाहिए। क्योंकि रबर टैपर वर्ण-वन से रबर के दृष्टि व अन्य पदार्थों का संग्रह करते हैं, संघ ने इन क्षेत्रों को सुरक्षित संग्रह क्षेत्र का नाम दिया।

"हमें लगा कि यह अमेजनिया की धरती का सर्वोत्तम उपयोग होगा," मेंडेस ने बताया। "हम रबर टैपरों ने स्वयं को कभी भी इस धरती का मालिक नहीं समझा। हम चाहते हैं कि इस धरती पर मालिकाना हक सरकार का होना चाहिए, और रबर टैपरों को इसके उपयोग का अधिकार मिलना चाहिए।"

रबर टैपरों के संघ ने जल्दी ही अन्य देशों के संगठनों के साथ सम्बन्ध बनाये। वर्ण-वन का भविष्य अब एक अंतरराष्ट्रीय मुद्दा बन चुका था।
विश्व भर में लोगों को वर्षा-वन के विनाश के बारे में जानकारी मिल रही थी। ऐसा कहा जा रहा था कि प्रत्येक सेकेण्ड एक फुटबाल के मैदान के बराबर वर्षा-वन का क्षेत्र नष्ट किया जा रहा था। एक वर्ष में वाशिंगटन राज्य के बराबर क्षेत्रफल के जंगल का निर्धारण हो रहा था।

पेड़-पौधों, कीट-पतंगों, पशु-पक्षियों और मछलियों की अनेक प्रजातियां, जिन्हें लिए वर्षा-वन ही एकमात्र घर था, अब खतरे में थीं। वैज्ञानिकों और पर्यावरणविदों ने आगाह किया था कि वर्षा-वन के इस विनाश का पूरा ग्रह पर भयंकर दुष्प्रभाव पड़ा निक्षित था।

दूसरे देशों ने ब्राज़ील से आग्रह किया कि वह वर्षा-वन के इस विनाश को रोके। लेकिन इस क्षेत्र को विकसित करने के आर्थिक लाभ इस निर्धारण देश के लिए बहुत महत्वपूर्ण थे।

सुरक्षित संग्रह क्षेत्रों के गठन के प्रस्ताव ने लोगों को यह दर्शाया कि वर्षा-वन के पर्यावरण को बिना कोई हानि पहुँचाए भी वन से बहुत से लाभकारी उत्पादों की उपज संभव है। वास्तव में वन का इस प्रकार उपयोग करना पशु-फामों की अपेक्षा अधिक लाभकारी हो सकता था।

बीस वर्ष की अवधि में एक एकड़ भूमि से केवल १५ डॉलर मूल्य के पशु-मांस का उत्पादन हो सकता था। लेकिन उसी एक एकड़ का उपयोग यदि रबर, ब्राजील-नट व अन्य दीर्घकालिक उत्पादों के लिए किया जाये, तो उसका मूल्य ७२ डॉलर से भी अधिक होगा।
माचष १९८७ में अमेरिका के पर्यावरण संगठनों ने मेंडेस को वाशिंगटन आने का निमंत्रण दिया। वहां उसने वर्ष-वन को बचाने के संघर्ष के विषय में सीनेट व कांग्रेस के सदस्यों को सम्बोधित किया। जो कोई भी उससे मिला, ब्राजील के जंगल से आये इस विनम्र रबर टैपर की मजबूती और दृढ़ निश्चय से प्रभावित हुआ।

उसी वर्ष संयुक्त राष्ट्र संघ ने चीको मेंडेस को वर्ष-वन के लिए उसके कार्य के लिए पुरस्कृत किया। श्रेष्ठ संसार संस्था (Better World Society) ने भी उसे पर्यावरण संरक्षण पदक (Protection of Environment Medal) से सम्मानित किया।

श्रेष्ठ संसार संस्था के इस सम्मान समारोह में मेंडेस ने श्रोताओं को इन सादगीपूर्ण शब्दों से सम्बोधित किया:

"मैं एक रबर टैपर हूँ। मेरे लोग पिछले १३० वर्षों से वन में रह कर, उसे कोई हानि पहुँचाए बिना, उसके संसाधनों का उपयोग कर रहे हैं। हमारा अमेरिका के लोगों से यही आदेश है कि वे हमारी सहायता करें। साथ मिल कर हम वन की रक्षा कर सकते हैं, और उसके संसाधनों का उपयोग भी। एक खजाने जैसे इस महान संसाधन की हम अपनी भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षा कर सकते हैं।"
"पहले आम लोगों में वर्ष-वन के प्रश्न को उल्लेख नहीं करते थे, क्योंकि मुझे पता है कि वे जरूर जंगल से तोड़े गए होंगे।"

अध्याय ७ : संघर्ष जारी है

"चीको मेंडेस क्रिसमस तक जीवित नहीं बनेगा।"

दिसंबर १९८८ में ये शब्द दबी आवाज में आके में चारों ओर सुनाई दी गई थी। मेंडेस ने बुद्धि भी ऐसा सुना था। उसे डर था कि शायद जल्दी ही उसकी हत्या कर दी जाएगी।

सुरक्षित संग्रह क्षेत्रों की सफलता के साथ ही श्रमिक संघ के सदस्यों के विरुद्ध धमकियों और हिंसा की घटनाएँ बढ़ गईं थीं। १९८० के दशक के अंत में एक हज़ार से भी अधिक श्रमिक संघ के सदस्यों और रबर टैपरों की हत्याएं हुईं थीं।

चीको मेंडेस मरने नहीं चाहता था। "यदि आकाश के कोई फूसीता नीचे आये और इस बात की गारंटी दे कि मेरी मृत्यु से श्रमिक आंदोलन और मजबूत हो जायेगा, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी," मेंडेस ने अपनी मृत्यु से कुछ ही समय पहले एक पत्र में ऐसा लिखा था। "लेकिन अनुभव हमें ठीक इसका विपरीत बताता है," उसने कहा। "भव्य अंतिम संस्कारों और बड़े-बड़े जुलूसों के द्वारा हम वर्ष-वन को नहीं बचा सकते। मैं जीना चाहता हूँ।"
चीको के लिए उसका परिवार, जिसमें अब उसका दो साल का बेटा सेंडिनो भी शामिल था, अत्यंत महत्वपूर्ण था। वह नहीं चाहता था कि उसकी पत्नी और बच्चों को कोई दुःख झेलना पड़े। वह नहीं चाहता था कि वे बेसहारा हो जाएं।

लेकिन फिर भी उसे लगा कि वह इस संघर्ष को छोड़ नहीं सकता। "हम इस लड़ाई से भाग नहीं सकते," मेंडेस ने जोर दे कर कहा। "हम संघर्ष जारी रखना होगा। हम अपने साथियों की हत्याएं जारी रखने के लिए उड़ जा।" चीको मेंडेस की हत्या की छह बार कोशिशें हुईं, लेकिन वह भय नहीं था। वह जहाँ भी जाता, उसे अंगरक्षक साथ रखने पड़ते थे। 20 दिसंबर को मेंडेस ने गहरे जंगल में बसे शहर सेना मुद्रेड्स की यात्रा की, जहां उसने ४०० से भी अधिक टैपरों को श्रमिक संघ में शामिल किया। हालाँकि उसके मित्रों के उसे सापुरी से बाहर रहने का आगाह किया था, मेंडेस अपने घर लौटने के लिए उड़ जा। वह क्रिसमस का पर्व अपने परिवार के साथ मनाना चाहता था।

22 दिसंबर १९८८ की शाम, मेंडेस ने सापुरी में अपने घर पर अपने अंगरक्षकों के साथ पास का खेल समाप्त ही किया था। भोजन से पहले उसने स्नान करने का निश्चय किया। स्नानकीर्ति उसके घर से भलग एक दूसरी इमारत में था।

उसके घर के पीछे, जंगल की घनी झाडियों में छुपे उसके हत्यारे मेंडेस की प्रतीक्षा कर रहे थे।

मेंडेस पिछले दरवाजे से बाहर निकला। जब उसने अंधेरे में टॉच जलाई, मानो उसने स्वयं की हत्याओं के हवाले कर दिया। अंचलक, अंधेरे में से गोलियों की एक बौछार उसके ऊपर बस पड़ी। मेंडेस लड़खड़ाता हुआ वापस घर में जाता।

और कुछ क्षणों में ही उसकी मृत्यु हो गई।
चीको मेंडेस के निधन का समाचार विश्व भर के समाचार पत्रों में मुख्य पृष्ठ पर छपा। उसके अंतिम संस्कार में एक हजार से भी अधिक लोग शामिल हुए।

मूसलाधार बससात में भीतर वे मंतव चलते हुए चर्च तक गए। उन्में से एक लकड़ी के क्रॉस पर लग मेंडेस के एक विशाल छायाचित्र को उठा कर चल रहा था। राजनेता, फिल्मकार, एक्टर, पत्रकार, वैज्ञानिक और पर्यावरणविद भी रबर टैपरों के साथ उनके आनुभूति और दुःख में शामिल हुए।

यह वे लोग थे जिन्हें मेंडेस ने वन को बचाने के अपने संघर्ष के लिए संगठित किया था।

"मुझे अपने अंतिम संस्कार के समय फूल न चढ़ाये जाएँ," चीको मेंडेस ने एक बार कहा था, "क्योंकि मुझे पता है कि वे जरूर जंगल से तोड़े गए होंगे।"

लेकिन आज के इस एक अवसर पर मेंडेस के मित्रों ने उसकी इच्छा की परवाह नहीं की। उसकी समाधि पर सुन्दर ताज़े फूल चढ़ाये गए।

२६ दिसंबर १९८८ को एक मवेशी फाम-मालिक के बेटे, डासी अल्चेस पेराने मेंडेस की हत्या का जुर्म स्वीकार किया। दिसंबर १९९० में सापुरी का न्यायलय २०० से भी अधिक लोगों से खबारख भरा हुआ था, उस मुकदमे को सुनने के लिए, जिसे ब्राजील के अखबारों ने उस सदी का सबसे बड़ा मुकदमा कहा दिया था। २२ वर्ष का पेराना और उसका पिता डासी अल्चेस डा सिल्वा, दोनों को चीको मेंडेस की हत्या का दोषी घोषित किया गया। दोनों को १९ वर्ष की कैद की सजा मुनाई गई।
चीको मेंडेस का जीवन और उसकी मृत्यु. जोनी है वर्षा-वन और उसके लोग, बस्क पूरी पृथ्वी के संरक्षण के लिए समर्पित थे। मेंडेस ने जोर देक कहा था, "अमोजनिया का विनाश हम किसी कीमत पर बर्दाशत नहीं करेंगे। अमेजन की बर्बादी जंगल के लोगों के लिए ही नहीं, पूरी घरती के लिए खतरा उत्पन करती है।"

मेंडेस के मित्रों और अनुयायियों को उसके निधन से बहुत धक्का पहुँचा था। लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। उन्हें विश्वास था कि बदूदर की एक गोली वर्षा-वन के लिए चीको के संरक्षण को हरितज नहीं रोक सकती।

मार्च १९८९ में २०० सर्वोत्तम और रेड इंडियन उस समर्थन में एक हुए जिसकी योजना चीको मेंडेस ने बनाई थी। यह वन-निवासियों के संघ (Alliance of the People of the Forest) का पहला समर्थन था। चीको के चर्चरे भाई सेवालिया ने समर्थन की समर्पित किया: "हमारे साथी की हत्या करके शायद उन्होंने सोचा होगा कि वे हमारे आदोलन को समाप्त कर देंगे। लेकिन वे गलत सोचते हैं। आज यहाँ हम अपने उस साथी के संरक्षण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की घोषणा करते हैं।"

मार्च १९८९ के समर्थन में एक "वन-निवासियों का घोषणा-पत्र" जारी किया गया। इसमें लिखा था:

"वन के निवासी चाहते हैं कि उनके क्षेत्र सुरक्षित रहें। यह संगठन इस अति-विशाल पर्यंत नाजुक जीवन-तंत्र, जो कि हमारी समस्या का स्रोत और हमारी संस्कृति का आधार है, की रक्षा के लिए सारे प्रयासों को अपनाएगा।"

यह चीको मेंडेस के कारण ही है, कि आज विश्व भर में लोग वर्षा-वनों के संरक्षण के लिए कार्य कर रहे हैं। वर्षा-वनों और उनके इको-सिस्टम के बारे में लिखे गए लेख और पुस्तकें लोगों को दीर्घकालीन खेती के महत्व के बारे में शिक्षा दे रही हैं। बहुत से लोगों ने वर्षा-वनों के पेड़ों से बनी वस्त्रुएं छोड़ी, या वर्षा-वन में पाले गए पशुओं का मांस खाना बंद कर दिया है, और इस प्रकार वे मेंडेस के कार्य को समर्थन दे रहे हैं।

उनके अतिम संस्कार के समय चीको के एक मित्र ने उसके भरी समर्थकों की ओर से कहा था: "चीको अभी भी जीवित है, उन सभी कार्यों में जो उसने किये, और उन सिद्धांतों में जिनका उसने प्रतिनिधित्व किया। इस संघर्ष को जारी रखने के लिए हम प्रतिबद्ध हैं।" जहाँ कहीं भी लोग इस पृथ्वी की प्रत्यु समझौता और विविधता की सुरक्षा के लिए संरक्षण कर रहे हैं, वह प्रतिबद्धता आज भी कायम है।

समाप्त